"करते करणा"

• पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेधां खेतांह । दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह । अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह । सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंतांह ।

अर्थः- मनुष्य, वृक्ष, तीरथ, तट भाव, नदियां, बादल, खेत, द्वीप, लोक, मण्डल, खंड - ब्रहमण्ड, सरोवर, मेरु आदि पर्वत, चारे खाणियां अण्डज, जेरज, उतभुज व सेतज के जीव - जंतु इन सबकी गिनती का अंदाजा वही प्रभु जानता है जिसने ये सब पैदा किए हैं ।

• नानक जंत उपाइ के संभाले सभनाह । जिनि करते करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ।

अर्थः- हे नानक ! सारे जीव - जंतु पैदा करके, प्रभु उन सब की पालना भी करता है । जिस करतार ने ये सृष्टि रची है, इसकी पालना का फिक्र भी उसे ही है ।

सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जग । तिस जोहारी सुअसति तिस तिस दीबाण अभग । नानक सचे नाम बिन किआ टिका किआ तग ।1।म0-1।

अर्थः- जिस करतार ने जगत पैदा किया है, वही इनका ख्याल रखता है । मैं उसी से सदके हूँ, उसी की ही जै - जैकार करता हूँ भाव, उसी की महिमा करता हूँ उस प्रभु का आसरा जीव के वास्ते सदा अटल है । हे नानक ! उस हरि का सच्चा नाम स्मरण के बिना तिलक जनेऊ आदि धार्मिक वेश कोई मायने नहीं रखते ।

• लख नेकीआं चगिआईआ लख पुनां परवाण । लख तप उपर तीरथां सहज जोग बेबाण ।

अर्थः- लाखों नेकी के अच्छे काम किए जाएं, लाखों धर्म के काम किए जाएं, जो लोगों की नजरों में ठीक हों, तीर्थों पे जा के लाखों तप साधे जाएं, जंगलों में जा के सुन्न समाधि में टिक के योग - साधनाएं की जाएं

लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण । लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ।

अर्थः- रण - भूमियों में जा के सूरमों के वाले बेअंत बहादरी वाले कारनामें दिखाए जाएं, युद्ध में ही वैरी के सन्मुख हो के जान दे दी जाए, लाखों तरीकों से तवज्जो पकाई जाए, ज्ञान - चर्चा की जाए और मन को

एकाग्र करने के यत्न किए जाएं, बेअंत बार ही पुराण आदि धर्म - पुस्तकों के पाठ पढ़े जाएं

जिनि करते करणा कीआ लिखिआ आवण जाण । नानक मती मिथिआ करम सचा नीसाण ।2। पउड़ी । (467)

अर्थः- हे नानक ! ये सारी समझदारियां व्यर्थ हैं । दरगाह में स्वीकार होने के लिए उस प्रभु की बख्शिश ही सच्चा परवाना है, जिसने ये सारी सृष्टि रची है और जिसने जीवों का जीना - मरना नियत किया है इसलिए उसकी बख्शिश का पात्र बनने के लिए उसका नाम स्मरण ही उत्तम मत है ।

- कुंभे बधा जल रहै जल बिन कुंभ न होई । गिआन का बधा मन रहै गुर बिन गिआन न होई ।5। पउड़ी ।

अर्थः- जैसे पानी घड़े आदि बरतनों में ही बंधा हुआ भाव, पड़ा हुआ एक जगह टिका रह सकता है, वैसे ही गुरु के ज्ञान भाव, उपदेश का बंधा हुआ ही मन एक जगह टिका रह सकता है अर्थात, विकारों की तरफ नहीं दौड़ता । जैसे पानी के बिना घड़ा नहीं बन सकता वैसे ही गुरु के बिना ज्ञान पैदा नहीं हो सकता ।

पड़िआ होवै गुनहगार ता ओमी साध न मारीऐ । जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ।

अर्थः- अगर पढ़ा - लिखा मनुष्य मंदकर्मी हो जाए तो इसे देख के अनपढ़ मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए कि पढ़े - लिखे का ये हाल तो अनपढ़ का क्या बनेगा, क्योंकि अगर अनपढ़ मनुष्य नेक है तो उसे मार नहीं पड़ती । निपटारा मनुष्य की कमाई पर होता है, पढ़ने या ना पढ़ने का मूल्य नहीं पड़ता ।

ऐसी कला न खेडीऐ जित दरगह गइआ हारीऐ । पड़िआ अते ओमीआ वीचार अगे बीचारीऐ । मुहि चले सु अगे मारीऐ ।12।

(5-469)

अर्थः- मनुष्य जैसी करतूत करता है, उसका वैसा ही नाम बन जाता है इसलिए ऐसी खेल नहीं खेलनी चाहिए जिसके कारण दरगाह में जा के मानव जनम की बाजी हार बैठें । मनुष्य चाहे पढ़ा हो चाहे अनपढ़, प्रभु की दरगाह में केवल प्रभु के गुणो की विचार ही स्वीकार पड़ती है । जो मनुष्य इस जगत में अपनी मर्जी के अनुसार ही चलता है, वह आगे जा के मार खाता है ।

• सचा साहिब एक तूं जिन सचो सच वरताइआ । जिस तूं देहि तिस मिलै सच ता तिन्ही सच कमाइआ ।

अर्थः- हे प्रभु ! केवल तू ही पूरन तौर पर अडोल रहने वाला मालिक पूरन तौर पे खिड़ाव में है, और तूने खुद ही अपनी अडोलता का गुण जगत में वरता दिया है । पर ये खिड़ाव वाला गुण केवल उस - उस जीव को ही मिलता है जिस - जिस को स्वयं देता है, तेरी किरपा की इनायत से, वह मनुष्य उस खिड़ाव अनुसार अपना जीवन बनाते हैं ।

सतिगुर मिलिऐ सच पाइआ जिन्ह कै हिरदै सच वसाइआ । मूरख सच न जाणन्ही मनमुखी जनम गवाइआ । विचि दुनीआ काहे आइआ ।8।

(1-467)

अर्थः- जिन्हें सतिगुरु मिल जाता है उन्हें इस पूरन खिड़ाव वाली दाति मिलती है, सतिगुर उनके हृदय में ये खिड़ाव टिका देता है । मूर्खों को खिड़ाव की सार नहीं आती, वे मनमुख उससे वंचित रह के अपना जनम व्यर्थ गवाते हैं, जगत में उनके जन्म का कोई लाभ नहीं होता ।

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"